गुरुमाई चिद्विलासानन्द पर मनन

चिति के साथ सम्पर्क स्थापित करना

जय सायबर्ट द्वारा लिखित

वर्ष १९९२ की बात है। गुरुपूर्णिमा का दिन था और श्री मुक्तानन्द आश्रम के शक्ति मण्डप में श्रीगुरुमाई के साथ सत्संग आयोजित था। मेरे माता-पिता, पहले से ही सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास करते रहे थे और वे सत्संग में भाग लेने के लिए आए थे, अतः वे मुझे, अपने पाँच सप्ताह के बच्चे को, सत्संग के समापन पर श्रीगुरुमाई के दर्शन कराने लाए थे।

कहानी को आगे बढ़ाते हुए मैं आपको आरम्भिक मई २०२१ की एक बात बताता हूँ। उस दिन सुबह मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम में अनुग्रह की एक बिल्डिंग से होकर जा रहा था, क्योंकि मेरी सेवाओं में से एक सेवा यह सुनिश्चित करने की है कि श्री मुक्तानन्द आश्रम के सभी भवनों व बगीचों का रखरखाव ठीक से हो रहा है। जब मैं एक मोड़ से होकर गुज़र रहा था तो मैंने देखा कि श्रीगुरुमाई गलियारे से होकर मेरी ओर आ रही हैं। मैं रुक गया ताकि गुरुमाई जी के लिए वहाँ से गुज़रने हेतु पर्याप्त जगह हो। जब गुरुमाई जी ने मुझे देखा तो उनका चेहरा खिल उठा और उन्होंने कहा, “मैं अभी तुम से ही मिलना चाहती थी।”

फिर गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि उनके विचार से वहाँ के एक बगीचे के दो मैपल के वृक्षों को सहारा देने की और शायद उनकी छँटाई करने की आवश्यकता है। गुरुमाई जी ने समझाया कि यदि आश्रम के इन सजावटी मैपल के वृक्षों की छँटाई न की जाए तो उनका आकार ख़राब हो जाता है और वे अनावश्यक रूप से बढ़ते जाते हैं, और उनकी शाखाएँ अधिक भारी होकर टूट जाती हैं। गुरुमाई जी ने कहा कि गुरुदेव सिद्धपीठ में आम के बहुत सारे पेड़ हैं जिनकी नियमित रूप से छँटाई होती रहती है, अन्यथा उनमें फल नहीं लगेंगे। गुरुमाई जी ने मुझे उसी सुबह जाकर उन दो मैपल के वृक्षों को देखने के लिए कहा। मैं बिना कोई देरी किए उन पेड़ों को देखने बगीचे में गया।

दूसरे दिन सुबह जब मैं अनुग्रह के सामने वाले बगीचे में कुछ पौधों की जाँच कर रहा था, मैंने गुरुमाई जी को बिल्डिंग से लगे रास्ते से आते हुए देखा। मैं गुरुमाई जी के साथ-साथ चलने लगा, विशेषकर इसलिए क्योंकि मैं उन्हें बताना चाहता था कि उन्होंने मुझसे जिन दो पेड़ों को देखने के लिए कहा था, वे मैंने देख लिए हैं। गुरुमाई जी ने मुझसे पूछा कि क्या उनमें से किसी भी पेड़ की छँटाई करने

की आवश्यकता है। मैंने उत्तर दिया कि मैं इस बारे में नहीं जानता व इस विषय में और भी ठीक-से पता लगाने वाला हूँ। फिर गुरुमाई जी ने मुझसे कहा कि मैं बगीचे में जाने का अपना पूरा विवरण दूँ, ताकि उन्हें इसका पूरा-पूरा चित्रण मिल सके कि वहाँ क्या हुआ। मैंने बताया कि मैं वहाँ जाकर पाँच मिनट रुका था और मैने पेड़ों को दूर से ही देखा था। मैंने कहा कि मैं इस विषय में दस्तावेज़ों में खोजकर पता लगाऊँगा ताकि मैं यह जान सकूँ कि इन पेड़ों की छँटाई करने का नियत समय व रीति क्या हैं।

गुरुमाई जी ने कहा, "जय, तुमने इन पेड़ों को दूर से देखा जबकि मैंने तुमसे कहा था कि जाकर ठीक से उनका हाल देखो, यह तय करने के लिए कि वे कैसे हैं और क्या करने की ज़रूरत है? पेड़ों को कैसे पता चलेगा कि तुम उनका हाल देखने के लिए गए थे अगर तुमने उन्हें अपना चेहरा ही नहीं दिखाया? उन्हें यह जानना ज़रूरी है कि तुम उनकी देखभाल करने के लिए आ रहे हो। और तुम्हें पता है ऐसा क्यों है? पेड़ों में चिति का वास है। सभी जड़ और चेतन वस्तुओं में चिति का वास है।

"जब तुमने उन पेड़ों को दूर से देखा तो तुमने उन्हें वह आदर नहीं दिया जिसके वे हक़दार हैं। न तुमने पेड़ों को देखा और न तुमने पेड़ों को यह अवसर दिया कि वे तुम्हें देखें। पेड़ जीते-जागते जीव हैं! तुम्हें ज़रूरत है उन्हें सुनने की, उनके साथ रहने की, उनकी छाल और पत्तियों को स्पर्श करने की। केवल तभी तुम यह जान सकोगे कि उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत है। एक पेड़ को महसूस करने से, उससे सचमुच जुड़ने से, उससे बात करने से और उसकी बात सुनने से, तुम यह पता कर सकोगे कि कब पेड़ रोगग्रस्त है, या कब उस पेड़ को किसी चीज़ की ज़रूरत है।

"प्रत्येक वस्तु में चिति के वास को स्वीकारने का यह एक स्वाभाविक तरीक़ा है। अपने पर्यावरण के साथ, तुम्हारी निगरानी में जो पेड़ और प्रकृति हैं उनके साथ, एकलय होने पर तुम्हें सहज ही यह एहसास हो जाएगा कि क्या करना है। और—प्रकृति तुमसे बात करेगी।"

श्रीगुरुमाई के बोलना आरम्भ करने के क्षण से ही मुझे अनुभव हुआ कि वे मुझे जो सिखा रही हैं उसे मैं गहराई से समझने लगा हूँ। मैं देख पा रहा था कि श्रीगुरुमाई कितने विभिन्न तरीक़ों से मुझे प्राकृतिक जगत के बारे में इस ज्ञान की शिक्षा देती आ रही हैं, विशेषकर वह तरीक़ा जिसमें मैंने देखा है कि स्वयं श्रीगुरुमाई प्रकृति के साथ किस प्रकार संवाद व व्यवहार करती हैं। जब मैं गुरुमाई जी को बड़े ध्यान से सुन रहा था, मैं जानता था कि ये सिखावनियाँ मेरे लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं जिन्हें मुझे सीखना व जिनका पालन करना है और मैं यह भी जानता था कि ऐसा करके ही मैं यह सुनिश्चित करने की अपनी इस ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकता हूँ कि आश्रम-परिसर के पेड़ फलें-फूलें। श्रीगुरुमाई से इन

सिखावनियाँ को प्राप्त कर मुझे एहसास हुआ कि इन सिखावनियों ने मुझे अपनी सेवा को देखने व अर्पित करने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है जिससे अपनी इस सेवा को मैं एक नए नज़रिए से देखूँ व उसके प्रति नवीनता का भाव रखते हुए वह सेवा करूँ—मैं समझ गया कि मुझे आश्रम के सभी वृक्षों के साथ और सामान्यतः सम्पूर्ण प्रकृति के साथ एक नवीन सम्बन्ध विकसित करने की आवश्यकता है।

कुछ दिन बाद, मैं बगीचों के प्रभारी, एक अन्य सेवाकर्ता के साथ अमृत प्रांगण में लिलैक की एक झाड़ी की छँटाई कर रहा था। यह एक सुन्दर झाड़ी है जिस पर उस समय बहार आई हुई थी और इसकी खुशबू से पिछले कई सप्ताहों से पूरा प्रांगण महक उठा था। जब लिलैक फूलता है तब हर कोई इसकी सुगन्ध का आनन्द लेने के लिए प्रांगण से गुज़रना चाहता है।

मैं इस समझ के साथ छँटाई का कार्य करने आया कि श्रीगुरुमाई ने मुझे जो सिखाया है उसे लागू करने का मेरा यह पहला अवसर है कि लिलैक की झाड़ी से कैसे जुड़ना चाहिए व कैसे उसकी बात को सुनकर उससे सन्देश प्राप्त करना चाहिए। जब हमने छँटाई शुरू की तो मैं लिलैक की उस झाड़ी के बीच खड़ा होकर उसकी शाखाओं को महसूस करने लगा, और शान्त होकर यह समझने का प्रयत्न करने लगा कि किस शाखा को रहने दिया जाए और किसकी छँटाई की जाए। ऐसा करते हुए, मुझे अपने अन्तर से एक सूक्ष्म संकेत मिलता कि किस शाखा को रहने देना है और किसे छाँटना है। इस तरह से पता लगाने के बाद कि झाड़ी को क्या चाहिए, मैं एक शाखा की ओर इशारा करते हुए, छँटाई-कार्य में निपुण दूसरे सेवाकर्ता से कहता, "इसे छाँटना कैसा रहेगा?"

और अकसर ही, उसकी आँखों में चमक आ जाती और वह हाँ कहता। जिस शाखा के बारे में मुझे महसूस होता कि इसकी छँटाई होनी चाहिए, वह उसके वनस्पतिशास्त्र के छँटाई के निर्देशानुसार उचित होता। जब वह मुझसे ऐसा कहता तो यह पेड़ों से सन्देश प्राप्त करने की मेरी इच्छा की पुष्टि होती। इससे मैं जान पाया कि मुझे बस यही करना है कि मैं शान्त रहकर उन पौधों की धीमी-सी बातचीत को, उनके अस्फुट स्वर को ध्यानपूर्वक सुनूँ, बारीकी से ध्यान दूँ और वे मुझे बता देगें कि उन्हें सम्बल देने के लिए मुझे क्या जानना आवश्यक है। मुझे एहसास हुआ कि झाड़ियों व पेड़ों के साथ यह वार्तालाप करना कितना सहज व प्रभावशाली है।

गुरुमाई जी ने मुझे संसार को देखने का और प्रकृति के साथ संवाद करने का जो नया तरीक़ा सिखाया था, उसने मेरे अन्दर एक हलचल-सी मचा दी और उससे मेरे अन्दर एक नई प्रेरणा प्रदीप्त हुई। मैं अपने सहकर्मियों को इस बारे में बताना चाह रहा था। जब मैंने उन्हें इस विषय में बताया, तब स्टाफ़ की एक

सदस्या ने मुझे वह प्रसंग सुनाया कि *उन्होंने* कैसे सीखा था कि पेड़ों के साथ किस प्रकार बात करना और किस प्रकार उनकी बात को सुनना चाहिए। उन्होंने मुझे बताया कि दशकों से गुरुमाई जी अपने विद्यार्थियों को इस दृष्टिकोण, इस तरीक़े के बारे में सिखाती आ रही हैं। उन्हींके शब्दों में वह प्रसंग इस प्रकार है :

सन् २००५ में जब मैं एक गुरुकुल विद्यार्थी के रूप में गुरुदेव सिद्धपीठ में सेवा कर रही थी, उस समय मुझे एक आश्रम-यात्रा में भाग लेने का अवसर मिला था; इस आश्रम-यात्रा में हमारा मार्गदर्शन एक ऐसी सिद्धयोगी ने किया था जो फ़्रांस की एक ज्ञानी इकॉलजिस्ट यानी परिस्थिति वैज्ञानिक थीं [परिस्थिति वैज्ञानिक—जीवों और उनके परिवेश या पर्यावरण के बीच के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करने वाला जीव वैज्ञानिक]। ये सिद्धयोगी नियमित रूप से गुरुदेव सिद्धपीठ आया करतीं और आश्रम के परिसर के शानदार वृक्षों की देखभाल करने की सेवा करतीं। इस बार जब वे आश्रम आईं तो उन्होंने दक्षिण काशी के वृक्षों की यात्रा करने में रुचि रखने वाले गुरुकुल विद्यार्थियों को अपने साथ चलने के लिए आमन्त्रित किया। [दक्षिण काशी गुरुदेव सिद्धपीठ में एक निर्मल व पावन स्थान है जिसका निर्माण गुरुमाई जी ने १९८० के दशक के उत्तरार्ध में किया था ताकि बाहर के ताज़े, खुले वातावरण में प्रकृति के सान्निध्य में सिद्धयोग की सिखावनियों के साथ जुड़ने व सिद्धयोग के अभ्यासों को करने के लिए सम्बल मिले।

इन इकॉलजिस्ट ने सिद्धयोग की मूल सिखावनी के विषय में बताते हुए अपनी बात आरम्भ की, कि ब्रह्माण्डीय चिति सर्वत्र और हर चीज़ में व्याप्त है। उन्होंने बताया कि स्वयं उन्होंने व गार्डन विभाग [आश्रम के उद्यानों व वाटिकाओं की देखभाल करने के लिए समर्पित विभाग] में सेवा करने वाले अन्य सेवाकर्ताओं ने वर्षों से गुरुमाई जी से सीखा है कि आश्रम के वृक्षों को कैसे सुनें—और वही चीज़ अब वे इकॉलजिस्ट हमें सिखाने वाली हैं! उनके निर्देशानुसार हममें से प्रत्येक व्यक्ति एक वृक्ष के पास जाकर, उसे स्पर्श करता, और उसके पास खड़े होकर, शान्त रहकर, सुनता। और फिर वे हमसे पूछतीं, "यह वृक्ष कैसा है?" हम उन्हें बताते कि हमने क्या सुना या महसूस किया। और वह बड़ा रहस्यमय होता; हम सभी को पता लगता कि यह वृक्ष खुश है या यह वृक्ष स्वस्थ नहीं है। फिर वे हमें वैज्ञानिक या वनस्पतिशास्त्र की दृष्टि से कुछ बातें समझातीं जो कि बिलकुल उसके अनुरूप होतीं जो हमने सुना या महसूस किया होता। इस रूप में गुरुमाई जी का प्रज्ञान पाना बड़ा ही अद्‌भुत और अविश्वसनीय था।

वर्ष २०२१ के मई माह में गुरुमाई जी से प्राप्त सिखावनियों को अपने अभ्यास में उतारते हुए मैं आश्रम-परिसर के पेड़-पौधों को और भी अधिक निकटता से जानने लगा हूँ, और उनके सौम्य, अस्फुट स्वरों को सुनने की बारीकियों के बारे में सीख रहा हूँ। उदाहरण के लिए, आश्रम के एक भाग में उगे फ़ोरसायथिया के पौधे अनेक महीनों से कुछ ज़्यादा बढ़ गए थे; अब ये पौधे दस फुट ऊँचे हो गए थे और उनकी छँटाई करना आवश्यक हो गया था।

छँटाई से पहले मैं उन फ़ोरसायथिया के पौधों से मिलने व उनसे बात करने गया। मैं उनकी बाड़ की पंक्ति के साथ-साथ चलता गया—उनकी शाखाओं को स्पर्श करता गया, उन्हें धन्यवाद देता रहा कि उन्होंने इतने वर्षों तक आश्रम को कितनी सुन्दरता प्रदान की है, और मैंने उनसे कहा कि हम उन्हें छाँटने वाले हैं। अपने हृदय में मैंने महसूस किया कि फ़ोरसायथिया के ये पौधे सराहना और कृतज्ञता का भाव व्यक्त कर रहे हैं, मानो वे प्रसन्न हैं कि मैंने उनका आदर कर, उन्हें सराहा और मैं उनके सान्निध्य में रहने, उनके साथ समय बिताने के लिए आया हूँ। मैं महसूस कर पा रहा था कि मैं उनकी तरफ़ इतना ध्यान दे रहा हूँ इस बात से वे कितने हर्षित हैं। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह तो बिलकुल वैसा ही है जैसा उन चीज़ों में होता है, जिनमें प्राण प्रवाहित हो रहा हो—वे पौधे कितने खुश थे कि कोई उनका इतना ध्यान रख रहा है, उनकी देखभाल कर रहा है, उनका आदर कर रहा है।

जब मैं उन पौधों से बात कर रहा था, तब मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' अनवरत रूप से मेरे बोध के अग्रस्थान में उभर रहा था—यह ऐसा था मानो इन पेड़ों के सान्निध्य में होते हुए मैं मन्त्रजप *न करूँ*, ऐसा हो ही नहीं सकता था। मैंने उनसे कहा कि हमें उनकी अधिकतर शाखाओं की छँटाई करनी होगी ताकि वे आने वाले अनेक वर्षों तक सेवा कर सकें, फल-फूल सकें। मैंने उनसे कहा कि उनकी छँटाई कर मैं उनकी ऊँचाई तीन फुट करने की सोच रहा हूँ ताकि वे नई कोंपलों को उगाने पर अपनी ऊर्जा को केन्द्रित कर सकें। उन्होंने बड़ी सौम्यता व शालीनता से उत्तर दिया कि तीन फुट तो बहुत ही कम होगा—चार या पाँच फुट ठीक रहेगा जिससे उनके सम्पूर्ण तन्त्र को अधिक गहरा आघात न पहुँचे। और इस तरह मैंने उनकी छँटाई के कार्य को आगे बढ़ाया।

मैं यह समझ गया हूँ कि वृक्षों में विद्यमान चिति के साथ यह आदान-प्रदान, यह वार्तालाप, और यह जुड़ाव उस सच्चे अन्तर-ज्ञान तक पहुँचने का एक तरीक़ा है जो मेरे अन्दर तब जाग्रत हुआ था जब मुझे श्रीगुरुमाई से शक्तिपात मिला था। सिद्धयोग पथ का अनुसरण करते हुए मैंने यह सीखा है कि वह एकमेव सर्वव्यापी चिति ही सर्व वस्तुओं का सार है। जिन चीज़ों के पास वह "वाणी" नहीं होती जिससे वे शब्दों या हाव-भावों द्वारा सामान्य रीति से संवाद नहीं कर पातीं, उनके पास एक वाणी

होती ज़रूर है—वे चिति के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त करती हैं; वही चिति जो हर एक चीज़ का आधार है, जो सबका मूल है और जिससे सब कुछ बना है। जब मैं इस चिति के साथ जुड़ता हूँ, जब मैं किसी चीज का यथोचित सम्मान करता हूँ, जब मैं किसी चीज़ को देखता हूँ और उसे अवसर देता हूँ कि वह भी मुझे देखे, जब मैं ध्यान देकर उससे पूछता हूँ कि उसे क्या चाहिए, तभी मेरे और मेरे संसार के बीच की संवाद-प्रणाली खुलकर कार्य करती है, और मैं इस विषय में अपने अन्तर-ज्ञान पर विश्वास रख पाता हूँ कि किसे क्या चाहिए और किसी क्षण विशेष में मुझे क्या करना चाहिए।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।